मंगलमय कहान

जिनका जन्म भरतक्षेत्र के भव्य भक्तों के जन्म-मरण के अभाव का कारण बना है, ऐसे स्वानुभूति विभूषित, प्रातः स्मरणीय, परम तारणहारण, मंगलमय कहान गुरुदेवश्री का पूर्णता के लक्ष्य से शुरुआत करने की प्रेरणा प्रदाता कल्याणकारी उपदेश हम सब अन्तर के भक्तिभावभीने उल्लास-उमंग-उत्साह से सुनते हैं और साधना के पन्थ में अग्रसर होने को प्रयत्नशील हैं। आपश्री का यह, तथा अन्य अनन्त अनुपम उपकार हैं, उसे वाणी से कैसे वर्णन किया जा सकता है, तथापि भक्तिगीतों द्वारा आपश्री के अलौकिक उपकारों और अनुकरणीय गुणगीत जाने का तथा आपश्री के आदर्शमय जीवनगाथा वर्णन का विनम्र प्रयास करते हैं। जिसके द्वारा आपश्री के पावन चरणकमल में भावना से रंगे हुए, भक्ति से भींगे हुए भावपुष्पों को अर्पण करते हैं।

तो प्रस्तुत है भक्तिगीत : मंगलमय कहान

भावी के भगवान ऐसे परम कृपालु गुरुदेवश्री ने इस काल में, इस क्षेत्र में, ज्ञान की यह रेलमछेल किस प्रकार की? ज्ञान का भण्डार कहाँ से लाये कि जिससे आत्मवैभव खुल्ला किया? श्रुतलब्धिवन्त गुरुदेवश्री के गुरु कौन थे? ऐसी जिज्ञासा यदि होती हो तो उसका समाधान यह है कि पूज्य गुरुदेवश्री भूतकाल के भव में महाविदेहक्षेत्र में राजकुमाररूप से थे। वहाँ वे नियमितरूप से जीवन्तस्वामी श्री सीमन्धरभगवान की वाणी सुनने जाते थे और वहाँ से ज्ञान का भण्डार निज अन्तर आत्मा में भरकर यहाँ आये थे और ज्ञान की रेलमछेल करके, ज्ञानवैभव खोला। इस प्रकार प्रिय विदेहीनाथ श्री सीमन्धरभगवान गुरुदेवश्री के गुरु हैं। तो चलो, हम सब गुरुदेवश्री की भक्ति-स्तुति करें, उससे पहले गुरु के भी गुरु ऐसे श्री सीमन्धरनाथ का आननदकारी स्मरण करते हैं।

परमोपकारी कहान गुरुदेवश्री तथा प्रशममूर्ति भगवती माता की साधनाभूमि सुवर्णपुरीधाम के जिनमन्दिर में विराजमान केवलज्ञानसुप्रभातस्वरूप श्री सीमन्धरप्रभु

के दर्शन करते ही रोमांच खड़े हो जाते हैं, भावना उल्लसित होती है और भक्ति उछलती है : हे नाथ! आपश्री ने कैसी आत्मध्यान की की धुन जगायी है! जगत में कहीं परिभ्रमण करनेयोग्य नहीं, ऐसा जानकर पद्मासन से विराजमान हो। करनेयोग्य कुछ हो तो आत्मसाधना है, इसके अतिरिक्त दूसरा कुछ करनेयोग्य नहीं, ऐसा मानकर आपश्री ने हाथ पर हाथ धरा है। आपश्री की नासाग्र दृष्टि ऐसा प्रसिद्ध करती है कि विश्व में देखने-जाननेयोग्य यदि कोई हो तो वह है आनन्दमूर्ति निज शुद्धात्मा। तथा आपश्री ने शुद्धोपयोगरूपी अग्नि में राग-द्वेषरूपी ईंधन को जला दिया है। हे प्रभो! आपश्री के चरणों में सविनय वन्दन करता हूँ।

देखोजी सीमन्धरस्वामी, कैसा ध्यान लगाया है;
कर ऊपर कर सुभग विराजे, आसन थिर ठहराया है... देखोजी... टेक।
जगतविभूति भूतिसम तजकर, निजानन्द पद ध्याया है;
सुरभित श्वासा आशावासा, नासा दृष्टि सुहाया है... देखोजी...१
कंचन वरन चलै मन रंच न, सुरगिरि ज्यों थिर थाया है;
जासपास अहि मोर मृगी हरि, जाति विरोध नशाया है... देखोजी...२
सुध उपयोग हुतासन में जिन, वसुविधि समिध जलाया है;
श्यामलि अलिकावलि सिर सोहै, मानो धूआं उड़ाया है... देखोजी...३
जीवन-मरन अलाभ-लाभ जिन, सबको नाश बनाया है;
सुरनरनाग नमहिं पद जाके, 'दौल' तास जस गाया है... देखोजी...४

जीवन्तस्वामी विद्यमान निज द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव की सीमा धरनेवाले श्री सीमन्धरदेव का स्मरण किया। अब हम देखते हैं कि पूज्य गुरुदेवश्री यहाँ भरतक्षेत्र में पधारे, तब यहाँ की परिस्थिति कैसी थी, इस भारतवर्ष में चारों ओर क्या नजर पड़ता था, क्या सुनने मिलता था।

★★★★★

ज्यां जोऊं त्यां नजर पडतां, राग ने द्वेष हा! हा!
ज्यां जोऊं त्यां श्रवण पडती, पुण्य ने पाप गाथा।
जिज्ञासुने शरण स्थल क्यां? तत्त्वनी वात क्यां छे?
पूछे कोने पथ पथिक ज्यां, आंधळा सर्व पासे।
अेवा अे कलिकालमां जगतनां, कंई पुण्य बाकी हतां;
जिज्ञासु हृदयो हतां तलसतां, सद्वस्तुने भेटवा।
अेवा कंईक प्रभावथी गगनथी, ओ कहान! तुं ऊतरे;
अंधारे डूबता अखंड सत्ने, तुं प्राणवंतुं करे।

★★★★★

उपकारी गुरुदेवश्री ने समस्त भरतभूमि को पावन किया, उस अवधि में चारों दिशाओं में जहाँ देखें वहाँ, आत्मा का अत्यन्त बुरा करनेवाली होने पर भी, कामभोगसम्बन्धी कथा ही अर्थात् राग-द्वेष करना और उसके फलरूप हर्ष-शोक भोगना, ऐसी बात ही सुनने को मिलती थी। जीवों को उसका ही परिचय था और निरन्तर आकुलता का ही अनुभव करते थे। तब संसाररूपी सागर तिरने के लिये जिनवाणीरूपी नौका तो थी, परन्तु नाव के सच्चे नाविक कहाँ थे? जिज्ञासु को शरण मिले, ऐसा कोई स्थल नहीं था। और किसी के पास सुख की प्राप्ति करावे, ऐसी तत्त्व की बात ही नहीं थी। सभी अज्ञान से अन्ध थे। ऐसे समय में अपने किसी महान पुण्योदय से और सत्प्राप्ति की अन्दर में झंखना-तड़पड़ाहट-धगश-जिज्ञासा थी, उसके कारण भरतक्षेत्र के आर्यखण्ड के भारतदेश के उमरालाधाम में कहान गुरुदेवश्री पधारे।

पंखी उडता' तां हती अेक आशडी, तरस्युं छीपे जो मळे मीठी वीरडी... १
झांझवाना जळथी छीपी नहि तरसडी, अेवा मिथ्या नीरनी ज्यारे खबरुं पडी... २
तरस्या जीवोने सत्य वाट सांपडी, के खारा समुद्र अे छे मीठी वीरडी... ३
आत्मधर्म बोध्यो छीपावी तरसडी, अज्ञान समुद्रे छो कहान ज्ञान वीरडी... ४

★★★★★

सच्चे तत्त्वज्ञान के पिपासु जीवों को एक आशा थी कि यदि ज्ञान के मीठे जल का समूह मिले तो हमारी प्यास मिटे। परन्तु चारों ओर—जहाँ नजर डालें वहाँ—मृगमरीचिका के जल के समान मिथ्यात्व ही आच्छादित दिखता था और अज्ञान का खारा समुद्र फैला हुआ ज्ञात होता था। ऐसे में अज्ञान के खारे समुद्र के बीच एक ज्ञानवीरडी दिखाई दी, जिसने आत्मज्ञान द्वारा तत्त्वपिपासु जीवों की प्यास बुझाई। उन कहान ज्ञानवीरडी का भरतक्षेत्र में अवतरण होने पर, उनके मंगलकारी-आनन्दकारी पदार्पण के सूचक मंगल मीठे स्वप्न भी माता उजमबा को आने लगे। उजमबा माता कभी झपक कर जाग उठते और विचार में चढ़ जाते कि ये ऐसे कैसे महात्मा गर्भ में आये हैं, जिनसे हमारा जन्म-अवतार सफल हुआ! ऐसी सुन्दर भावना और विचारों में आनन्दमय दिन व्यतीत होते हैं और एक दिन विक्रम संवत् १९४६ के वैशाख शुक्ल दूज और रविवार को पिता मोतीचन्दभाई का आँगन पावन-पवित्र बनता है, घर में दिव्यप्रकाश होता है, आकाश में दुन्दुभि बजने लगती है और....

माताने स्वप्नां लाघ्यां ने झबकीने जाग्यां उजमबा,
स्वप्नां अे मीठडां लाग्यां ने दुंदुभि वाग्यां उजमबा... माताने...१
जोयुं हृदयमां जागी ने नींदडी त्यागी उजमबा,
कुंखे आव्या छे बडभागी ने भावठ भांगी उजमबा... माताने...२
माताने उछरंग आव्यो ने संदेशो सुणाव्यो उजमबा,
मातापिता ने हर्ष न मायो, जोषीने तोडाव्यो उजमबा... माताने...३
मीठडां फळ अेम सुण्यां ने उछरंग आव्या उजमबा,
परम पुरुष अे जन्म्यां ने तेज उभराणां उजमबा... माताने...४

★★★★★

पूर्णिमा के पूर्ण चन्द्रमा समान शीतल और सूर्य के तेज समान दैदीप्यमान तेजस्वी बालक की मुखमुद्रा देखते ही माता-पिता का हर्ष समाता नहीं है, उफनता है। उफने ही न! अज्ञान-अन्धकार को भेदकर जिनकी ज्ञानकिरणें पूरे विश्वभर में फैलनेवाली

हैं, भववन में भूले पड़े हुए-भटकते हुए भरतक्षेत्र के भव्य भक्तों के लिये जो पथप्रदर्शक -समान हैं, ऐसे महापुरुष का आगमन होने से क्या माता-पिता को हर्ष नहीं होगा! उसके फलस्वरूप तुरन्त ज्योतिषी को बुलाया जाता है। ज्योतिषी ज्योतिष देखकर प्रसिद्ध करता है :— यह कोई सामान्य बालक नहीं, अलौकिक बालक है। यह भविष्य में या तो कोई महानगरी का राजा होगा अथवा जगत का तारणहार महाधर्मात्मा-ज्ञानी होगा।

ज्योतिष की आनन्दभरी मंगल घोषणा सुनकर माता-पिता तथा कुटुम्बीजन तो उल्लास से नाच उठे, उमराला के नगरजन भी हर्षविभोर हो गये। अरे! वैशाख महीने का कड़कड़ाता ताप होने पर भी कुदरत भी आनन्द से डोलने लगी। हे धर्मधुरंधर गुरुदेव! धन्य हैं आपश्री के माता-पिता! धन्य है उमराला गाँव कि जहाँ आपश्री के पदपंकज पड़े! अहो! आपश्री के पैर से स्पर्शित धूल भी धन्य है।

धन्य धन्य श्री उमराळा गाम, प्रगट्या धर्मधुरंधर कहान;
तारां शां शां करूं सन्मान, जगमां सत्य प्रकाशनहार...
ओगणीस छेंतालीस वरसे, वैशाख बीज रविवारे;
झलहल जगमां भानुप्रकाश, जन्म्या कहानकुंवर गुरुराज... धन्य...
माता उजमबा कुंख नंद, जन्म्या भारतना आ चंद... धन्य...
शोभे जन्मभूमिनां स्थान, जन्म्या लाडीला गुरुकहान... धन्य...
धन्य धन्य मात-पिता कुल जात, जन्म्या जगना तारणहार... धन्य...
मारा आतमना आधार, जन्म्या जगना तारणहार... धन्य...
सीमंधर-सुत जन्म्या, गगने वाजिंत्रो वाग्या;
इन्द्रो आनंदमंगल गाय, जन्म्या कहानकुंवर गुरुराज... धन्य...
माता उजमबाना लाल, जय जयकार जगतमां आज... धन्य...

★★★★★

कोई अवतारी महा सत्पुरुष का जन्म अपने गाँव में हुआ है, ऐसी बात जैसे-

जैसे उमराला में फैलने लगी, वैसे-वैसे लोगों के झुण्ड के झुण्ड बधाई लेकर जन्मबधाई के गीत गाते-गाते मोतीचन्द सेठ की दहली पर आते हैं। चलो, हम सब भी उत्साह-उमंग से जन्म बधाई करें.....

आज मंगल वधाई वागती रे, कहान कुंवर जन्म्या अहो आ...
आज गुरुजी पधार्यां भरतमां रे...

धन्य धन्य उमराला गामने रे, धन्य धन्य उजमबा मात... आज गुरुजी... १
धन्य मात पिता कुला जातने रे, जेने आंगण जन्म्या बाल कहान... आज गुरुजी... २
आज तेज थया जन्मधाममां रे, अेना भरतखंडमां प्रकाश... आज गुरुजी... ३
आज आनंद मंगल घेर घेर थया रे, ठेर ठेर अहो! लीला लहेर... आज गुरुजी... ४

★★★★★

वैशाख सुद बीजने वार, उजमबा घेर कहान पधार्यां...
गर्ज्या दुंदुभिना नाद, उमराला गामे कहान पधार्यां...

न माय आनंद कुटुंबीजन हैये, भाग्यवान मोतीचंदभाई... उजमबा... १
कहानकुंवरनो जन्म ही थतां, गंधोदक वृष्टि थाय... उजमबा... २
कहानकुंवरनो जन्म ही थतां, मनवांछित कुदरत थाय... उजमबा... ३
कहान जनमतां भरतखंड डोल्युं, जन्म्या अनुपम कहान... उजमबा... ४
मोतीचंदभाई घेर नृत्य आज थाय छे, घेर घेर मंगल थाय... उजमबा... ५
देव देवेन्द्रो मंगल आज गाय छे, भरतखंडमां डंका थाय... उजमबा... ६

★★★★★

ज्ञान :— भाई वैराग्य! इस अलौकिक बालक का नाम क्या रखा गया है?

वैराग्य :— बन्धु ज्ञान! इस बालकुंवर की उगते रवि समान तेजस्वी और सागर समान गम्भीर मुखमुद्रा देखकर 'कानजी' नाम रखा गया है। यह बाल कानजी ज्ञानकुंज में रमनेवाले बाल महात्मा थे।

ज्ञान :— फिर माता के लाडले बाल कानजी बड़े होने पर पढ़ने गये होंगे न?

वैराग्य :— हाँ, हाँ। उन्होंने लौकिक अभ्यास तो किया, परन्तु जैन पाठशाला का अभ्यास छोड़कर नहीं, हों! फिर क्या हुआ, उसकी तुझे खबर है?

ज्ञान :— हाँ भाई! क्यों नहीं? तेरह वर्ष की उम्र तक जन्मधाम उमराला में रहे। फिर पिताजी के साथ पालेज आये। वहाँ नौ वर्ष रहे, जिस दौरान पाँच वर्ष स्वयं ने दुकान चलायी और वह भी प्रमाणिकरूप से। तत्पश्चात् २४ वर्ष की उम्र में आत्महित की भावना से वैराग्यपूर्वक स्थानकवासी सम्प्रदाय में दीक्षा अंगीकार की।

तेज देखीने मात मोह्यां ने, कहान नाम राख्या उजमबा;
मातने कानुडा प्यारा के, अजब बाळ लीला उजमबा...

★★★★★

प्रभु निर्मळ बाळ लीलाअे, तुं वधीयो विवेक भावे;
रहेतो अंतरथी उदास, अद्‌भुत अेवी तारी वात...
धन्य धन्य श्री उमराणा गाम, प्रगट्या धर्मधुरंधर कहान...

★★★★★

बाणकुंवर कहान जुदा हतां कोई, खेलता'ता ज्ञानकुंज मांही...
उजमबा घेर कहान पधार्यां....
वीत्या वीत्या ते कांई बाळकाळ वीत्या, लागी धून आत्मानी मांही....
उजमबा घेर कहान पधार्यां....
वैरागी कहाने त्याग ज लीधो, काढ्युं अलौकिक कांई...
उजमबा घेर कहान पधार्यां....

★★★★★

बाळ कुंवर कहान अे लाडीला रे, मात पूरे कुंवरना कोड...
कहान गुरुजी पधार्यां भरतमां रे...
प्रभु पारणेथी आत्मनाद गाजता रे, अेनी मुद्रा अहो अद्भुत... कहान...
कुंवर कहाने अपूर्व सत् शोधियुं रे, अेना वैराग्य तणो नहीं पार... कहान...

★★★★★

वैराग्य :— परन्तु बन्धु! उन्हें सत्य किस प्रकार प्राप्त हुआ?

ज्ञान :— सुन, वैराग्य! दीक्षा लेने के पश्चात् आठ वर्ष बाद उस सत्यशोधक आत्मा को महासमर्थ दिगम्बर आचार्य श्री कुन्दकुन्दाचार्य रचित समयसार परमागम हाथ में आया। उसके गहरे अभ्यास से निर्ग्रन्थ वीतराग सनातन दिगम्बर जैनधर्म ही सच्चा मार्ग है, इस यथार्थ सत्य का स्वीकार हुआ और ४५ वर्ष की उम्र में सोनगढ़-सुवर्णपुरी में महावीर जयन्ती के मंगलकारी दिन सम्प्रदाय परिवर्तन किया।

दोनों साथ में :— धन्य हो उनके पुरुषार्थ को! धन्य हो मंगल परिवर्तन को! वीतराग मार्गप्राप्त कहान गुरुदेव की जय हो.....

अेणे त्याग कर्यो संसारनो रे, प्रकाश्या मुक्ति केरा पंथ...
आज वंदन करूं गुरुराजने रे...
कहानगुरुअे हलाव्या हिंदने रे, अहो! मलाव्यो ज्ञायकदेव... आज...
धर्मचक्री भरतमां ऊतर्यां रे, अहो धर्मावतारी पुरुष... आज...
ज्ञान अवतारी अहो आविया रे, पधार्यां सीमंधर-सुत... आज...
गुरुदेवनां गुणने शुं कथुं रे, प्रभु सेवक तणा शणगार... आज...

★★★★★

कुंदामृत पान पीधां, निज आतम काज कीधां;
जिननी साची राखी टेक, जाग्यो सत्य सुकानी एक... धन्य...
तारी महिमा अपरंपार, तारां शां करी अे सन्मान... धन्य...
धन्य धन्य श्री उमराळा गाम, प्रगट्या धर्मधुरंधर कहान.....
प्रभु ज्ञान खजाना खील्यां, तुज आतममांही प्रकाश्यां;
दीपे बाह्यांतर गुरुराज, जगमां सत्य प्रकाशनहार... धन्य...
जगमां बहु हतां अंधरा, सूझे नहि मार्ग लगारा;
साथी साचो जाग्यो कहान, जगमां सत्य प्रकाशनहार... धन्य...

★★★★★